राजस्थान के भौतिक प्रदेश

↳ धरातल की बनावट / उच्चावच के आधार पर प्रदेश

धरातलीय उच्चावच

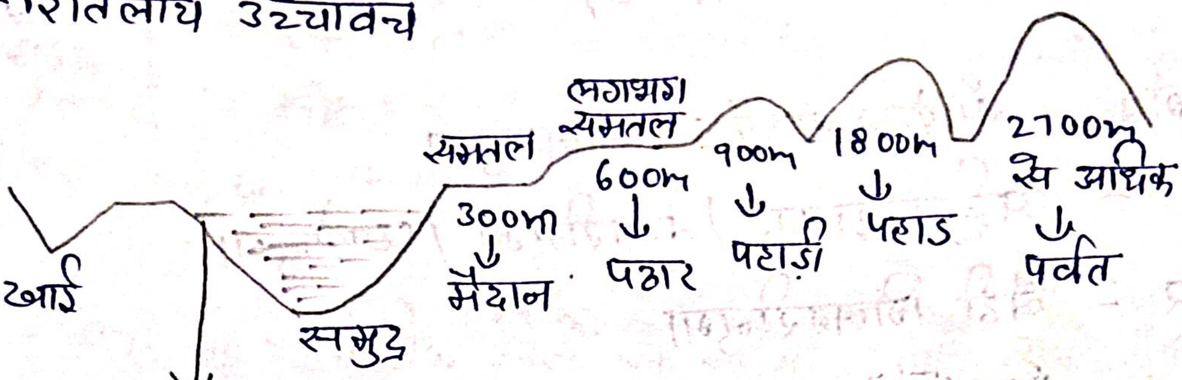

समुद्रतल → भारत में मापन – चेन्नई तट

– भौतिक प्रदेशों का निर्माण ⇒

- पृथ्वी का निर्माण सूर्य से अलग होना माना जाता है।
- पृथ्वी प्रारम्भ में तरल अवस्था में थी कालान्तर में पृथ्वी के ठण्डा होने पर कुछ भाग ठोस अवस्था में आया तथा कुछ भाग तरल अवस्था में रहा जिसे क्रमशः पैंजिया व पैंथालास कहा गया।

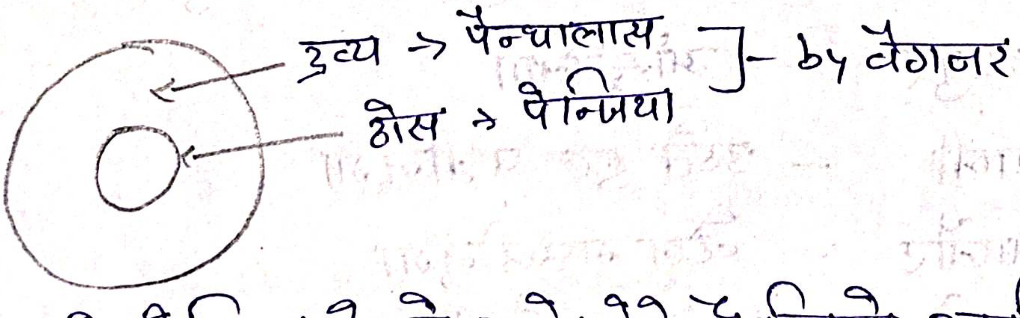

- बाद में पैन्जिया के दो टुकड़े होते हैं जिसके उत्तरी भाग को अंगारा लैण्ड व दक्षिणी भाग को गौंडवाना लैण्ड कहा गया तथा इन दोनों के मध्य स्थित जलीय भाग को टेथिस सागर कहा गया।

• कालान्तर में पृथ्वी पर वायुमण्डल का निर्माण हुआ। जिसके फलस्वरूप अंगारा व गोंडवाणा क्षेत्र में वर्षा हुई।

• वर्षा फलस्वरूप नदियाँ उत्पन्न हुई व टेथिस सागर में गिरने लगी व नदियां ~~अ~~ सागर में अवसाद का जमाव करने लगी।

• बाद में अंगारा लैण्ड में दक्षिण में व गोंडवाना लैण्ड में उत्तर की तरफ गति होती है।

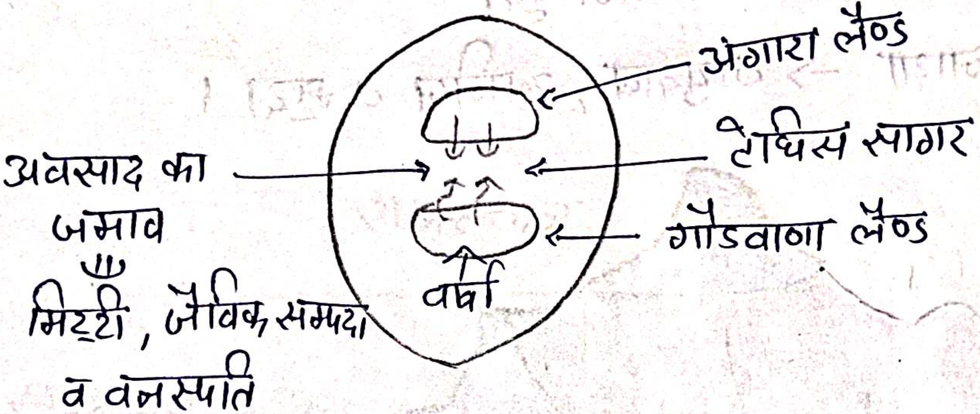

• सागर में अवसाद जमाव की प्रक्रिया व गोंडवाना - अंगारा लैण्ड में गति की प्रक्रिया के फलस्वरूप भुगर्भिक हलचल। भुगर्भिक शक्तियों के कारण धरातल पर विभिन्न स्थलाकृतियो व उच्चावचों का निर्माण किया।

★ राजस्थान के भौतिक प्रदेश का वर्गीकरण ⇒

⇒ सर्वप्रथम वर्गीकरण → प्रो॰ VC मिश्रा

कब किया → 1968 [1967-68]

आधार → उच्चावच, कृषि, जलवायु, आर्थिक/औद्योगिक

पुस्तक → "राजस्थान का भूगोल"

प्रदेश → 7 प्रदेशों में वर्गीकृत

आधार नहीं बनाया → वायुदाब, खनिज व मृदा।

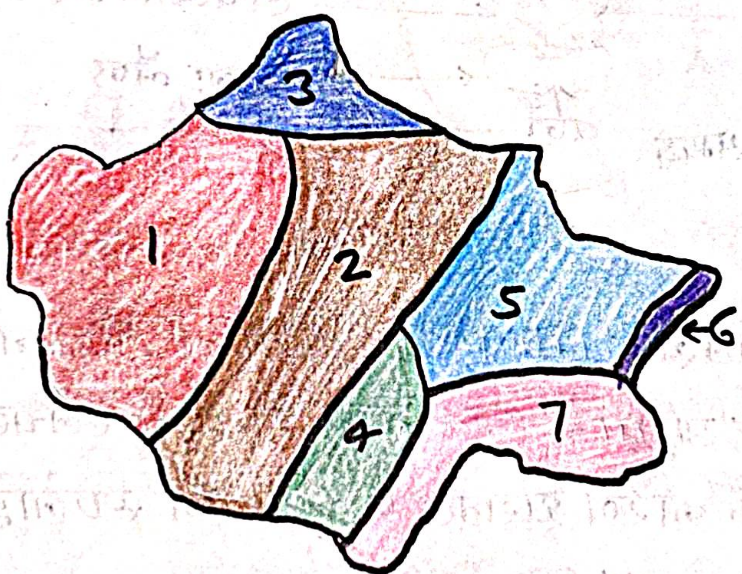

(1) शुष्क प्रदेश

(2) अर्द्धशुष्क प्रदेश

(3) नहरी प्रदेश

(4) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(5) पुर्वी कृषि व औद्योगिक प्रदेश

(6) चम्बल बीहड़ प्रदेश

(7) द॰पु॰ कृषि प्रदेश

★ रामलोचन सिंह के द्वारा RJ का वर्गीकरण ⇒

कब दिया → 1971

पुस्तक → "भारत का प्रादेशिक भुगोल"

भौतिक प्रदेश → 2 - वृहत भौतिक प्रदेश
|
4 - उप भौतिक प्रदेश
|
12 - लघु भौतिक प्रदेश

- राजस्थान
  - राजस्थान मैदान
    - मरुस्थलीय
      - (1) बीकानेर
      - (2) जैसलमेर
      - (3) बाडमेर
    - बांगड
      - (4) घग्घर
      - (5) शेखावाटी
      - (6) नागौर
      - (7) लुणी
  - राजस्थान पठार
    - अरावली पठार
      - (8) उत्तरी
      - (9) मध्य
      - (10) दक्षिणी
    - चम्बल बेसिन
      - (11) निम्न चम्बल
      - (12) मध्य चम्बल

★ आधुनिक वर्गीकरण ⇒

वर्गीकरणकर्त्ता → डॉ. हरिमोहन सक्सैना व प्रो. तिवाड़ी

कब → 1995

पुस्तक → "राजस्थान का प्रादेशिक भुगोल"

आधार → उच्चावच व भौतिक स्थालाकृति
(धरातल की बनावट , जलवायु , नदि बेसिन
व प्रशासनिक सीमा)

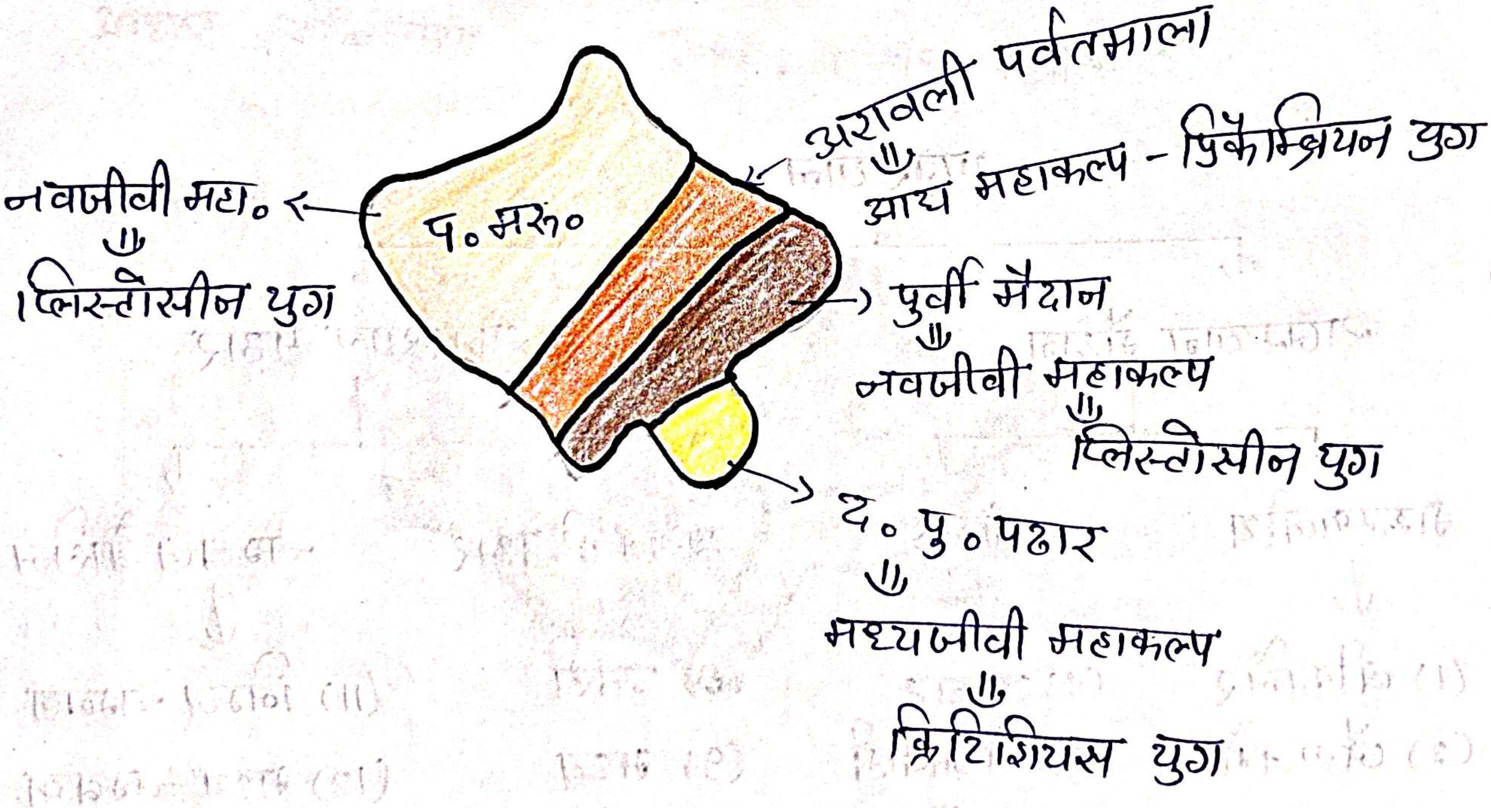

- भौतिक प्रदेशो के निर्माण के आधार पर क्रम ⇒

(1) अरावली
(2) द०पु० पठार
(3) पुर्वी मैदान
(4) प० मरुस्थल

★ भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी ⇒

	मरुस्थल	अरावली	मैदान	हाड़ौती
क्षेत्रफल	61.11% OR 2/3	9%	23%	6.89%
जनसंख्या	40%	10%	39%	11%
जिले	old → 12	old → 7 (13)	old → 10	old → 7
मिट्टी	रेतीली / बलुई	वनीय	जलोढ / कछारी	काली / कपासी
जलवायु	शुष्क एवं अर्द्धशुष्क	उपआर्द्र	आर्द्र	अति आर्द्र

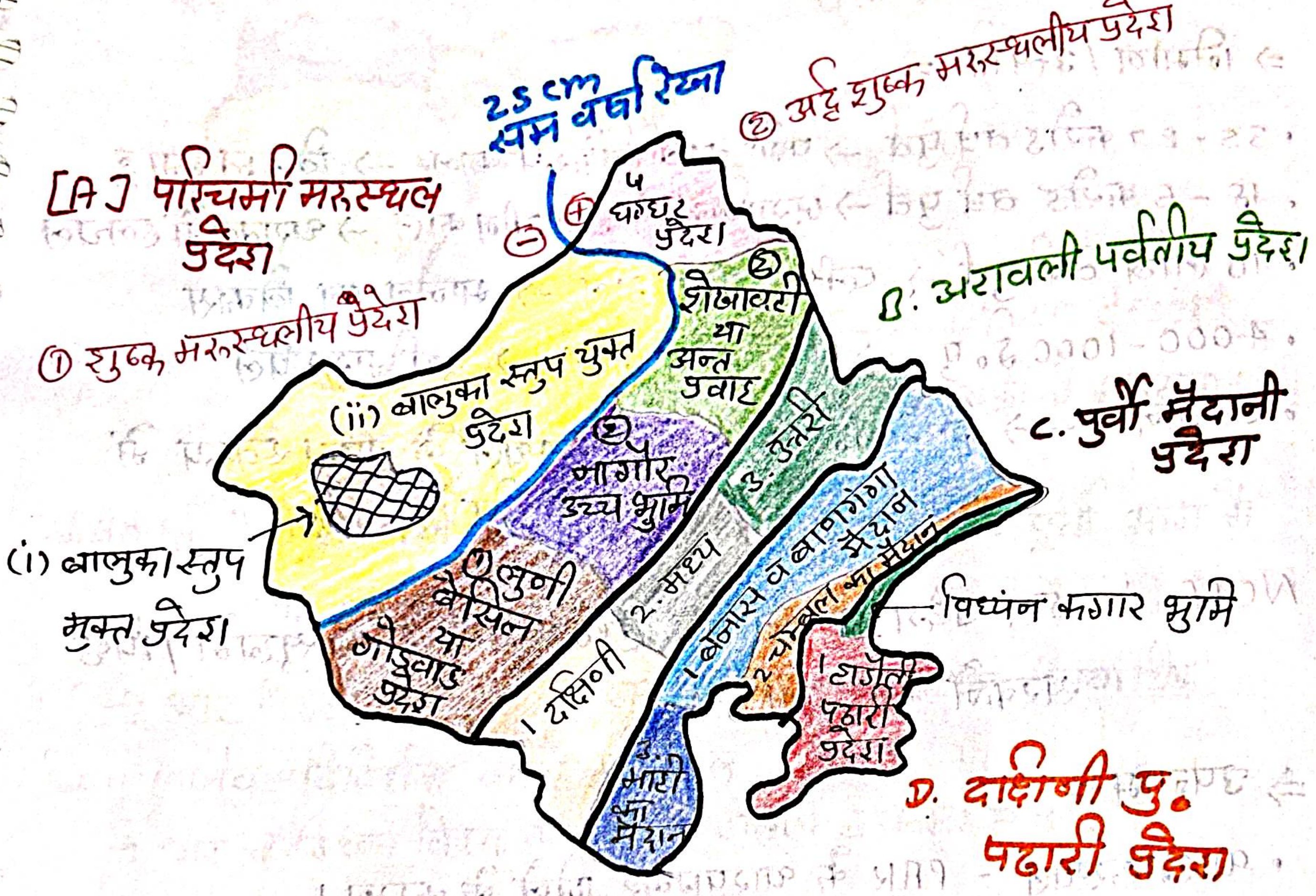

लॉरेशिया / अंगारालैण्ड → X

टेथिस सागर → मरुस्थल, मैदान

गौंडवानालैण्ड → पर्वत, पठार

मरु → मरुस्थल
मेरु → पर्वत
माल → पठार

[A] पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

⇒ निर्माण / उत्पत्ति =

- 35-27 करोड वर्ष पुर्व → पर्मो कार्बोनिफेरस काल → विस्तृत समुद्र
- 18-6 करोड वर्ष पुर्व → जुरासिक से इयोसीन काल → धरातल में हलचल
- 10 लाख वर्ष पुर्व → प्लीस्तोसीन काल → मानव का विकास
- 4000-1000 ई० पु० → होलोसीन काल → पुर्ण मरुस्थल
- वर्तमान → होलोसीन काल → मरुस्थल के बाह्य स्वरुप में परिवर्तन

NOTE ⇒ इस प्रदेश का निर्माण टेथिस सागर के सुखने / पिछे सरकने से हुआ हैं।

⇒ उपनाम =

- थारमरुस्थल - PAK के थारपारकर जिले के कारण।
- चौलीस्थान - PAK में स्थानीय नाम
- थली मरुस्थल - RJ में स्थानीय नाम
- मरुकान्तर - वाल्मिकी जी द्वारा रामायण में इसे मरुकान्तर के नाम से जाना।

Note :-

थली प्रदेश :- बीकानेर + चुरु व आसपास का उच्च मरुस्थलीय प्रदेश

- वाल्मिकी जी द्वारा सम्पुर्ण RJ के लिए भी मरुकान्तर शब्द का प्रयोग किया गया।

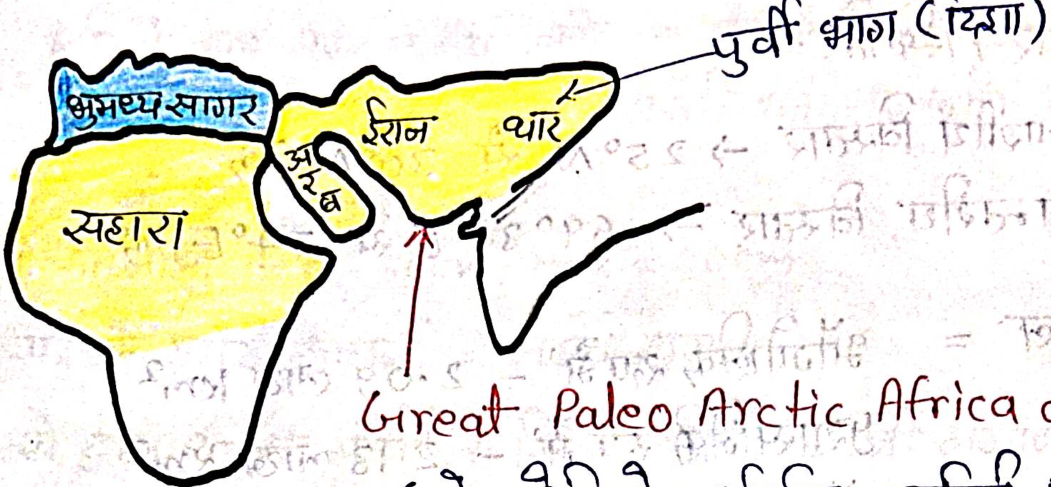

Great Paleo Arctic Africa desert
(ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ्रीकी मरुस्थल)

Note :- "ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ्रीकी मरुस्थल" के पूर्वी भाग में थार मरुस्थल का विस्तार फैला है।

→ थार मरुस्थल विश्व का सबसे आबाद मरुस्थल / सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरुस्थल

→ थार मरुस्थल विश्व का 17 वाँ सबसे बड़ा मरुस्थल है।

⇒ विस्तार ⇒ भारत (85%) + पाकिस्तान (15%)

- पंजाब (8%)
- हरियाणा (6%)
- RJ (58%) → पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (RJ का भौतिक प्रदेश)
- GJ (13%)

→ भारत का महान मरुस्थल (भारत का भौतिक प्रदेश)

Note :-

- RJ का पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश भारत के कौनसे भौतिक प्रदेश का हिस्सा है → भारत का महान मरुस्थल

★ राजस्थान के सन्दर्भ में ⇒

⇒ विस्तार / स्थिति ⇒

अक्षांशीय विस्तार → 25°N से 30°N तक

देशान्तरीय विस्तार → 69°30'E से 74°E तक

⇒ क्षेत्रफल = भौगोलिक रूप में – 2.09 लाख km²

प्रशासनिक रूप में – 2.13 लाख km²

मैदानी रूप में = 1,75,000 km² / 1.75 लाख km²

→ RJ के कितने % भौगोलिक क्षेत्र पर मरुस्थल का विस्तार फैला है – 61.11%

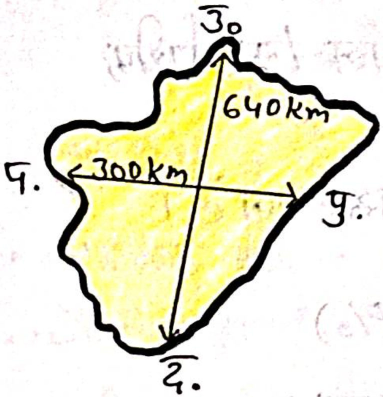

→ राज. की कितनी % जनसंख्या यहाँ निवास करती है = 40%

→ पू. से प. विस्तार = 300km

→ उ. से द. विस्तार = 640km

→ समुन्द्र तल से औसतन ऊचाई = 250m

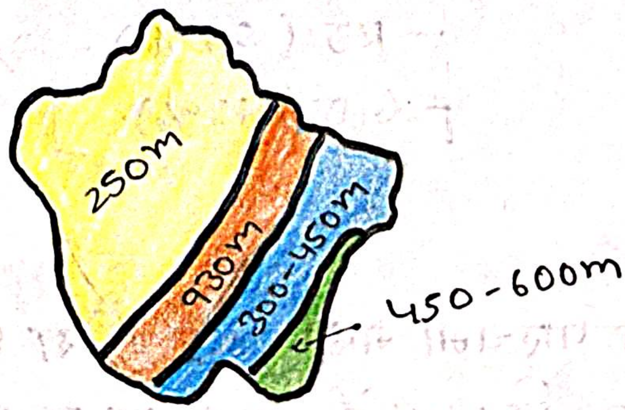

• RJ का सबसे निचला / निम्नतम भौतिक प्रदेश – प. मरुस्थलीय प्रदेश

Note :- RJ के कुल पश्चिमी जिले = 13 जिलें
RJ के कुल मरुस्थलीय जिले = 12 जिलें
(सिरोही शामिल नहीं)

- वर्षा की मात्रा = 0 - 50cm / max = 50cm
- सिंचाई का प्रमुख साधन = नहरों द्वारा
- नहरों द्वारा RJ का सर्वाधिक सिंचित जिला = श्री गंगानगर

प्रमुख मृदा → बालु, रेतीली, बलुई, मरुस्थलीय,
एन्टीसोल्स + एरिडिसोल्स
(उत्पादन की दृष्टि से पिछड़ी श्रेणी)

प्रमुख उत्पादन → बाजरा, ज्वार, ग्वार, मुंग, मोठ, चना, जीरा,
मुंगफली, तारामीरा, तिल आदि।
- मोटे अनाज वाली फसलों का उत्पादन।

★ मरुद्भिद् / Xerophytes ⇒

अर्थ → मरुस्थलीय प्रदेश में मिलने वाली वनस्पति को सम्मिलित रूप से मरुद्भिद् के नाम से जाना जाता है।

विशेषताएँ → जड़ें → अत्यधिक गहरी व लम्बी
तना → तने का बाहरी भाग कठोर
पत्तियाँ → अत्यन्त छोटी / कांटों के रुप में रूपान्तरित
Ex. ⇒ खेजड़ी, विलायती बबुल, बबुल, केर, बेर,
नागफनी, ग्वारभाटा, आक, जाल, रोहिड़ा etc.

प्रमुख घास => सेवण, धामण, मुरात, अंजन, बुर, ओलेवरी, मोबिया / मोचिया, मुरट etc.

प्रमुख जीव-जन्तु => डेजर्ट कैट, डेजर्ट फॉक्स, डेजर्ट फिश, चिंकारा, नील गाय, बटबट / रेत का तितर, गोडावण, ऊँट, भेड़, बकरी etc.

प्रमुख गौवंश => थारपारकर, राठी, साहिवाल, कांकरेज, सांचौरी, नागौरी etc.

प्रमुख जहरीला सांप => पीवणा सांप

→ सरस्वती नदी
↓ बहाव क्षेत्र
"लाठी सीरिज क्षेत्र"
- विस्तार = पोकरण से मोहनगढ़ तक (जैसलमेर)
- लम्बाई = 60 km [60-64 km]
- प्रधानता = सेवण घास
- श्रेणी = भुगर्भीय जल पट्टी

चांदन नलकुप / थार का घड़ा
(चांदन गाँव, जैसलमेर)

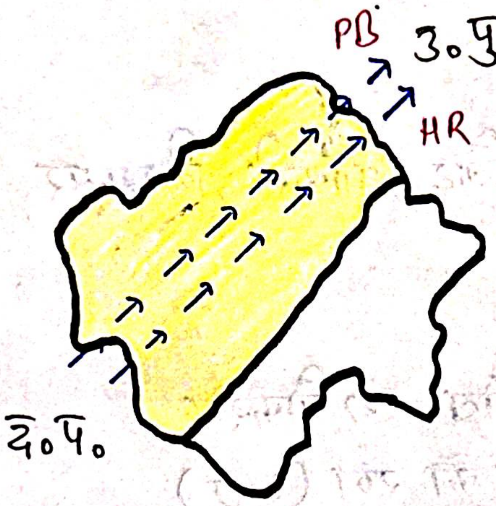

"रेगिस्तान का मार्च"

→ अर्थ – मरुस्थल का अपने मूल स्थान से आगे की ओर बढ़ना / फैलना या प्रसार करना।

→ सर्वाधिक अवधि – March to July के मध्य

→ मुख्यत: दिशा → द.प. से उ.पु. की ओर

→ सर्वाधिक रेगिस्तान का मार्च कहा होता है → नोचना गाँव, जैसलमेर

→ प्रभावित राज्य (अग्रसर हो रहा है) – पंजाब व हरियाणा।

NOTE ⇒

· रेंगती हुई मृत्यु – मृदा अपरदन

मरुस्थलीय प्रदेश —(निम्नतम भूमि)→ तल्ली —(जल एकत्रित)→ रन / टाट / प्लाया —(बेसिन भाग)→ खडिन

खडिन —(कृषि कार्य)→ खडिन कृषि —(सर्वाधिक)→ जैसलमेर ; पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा

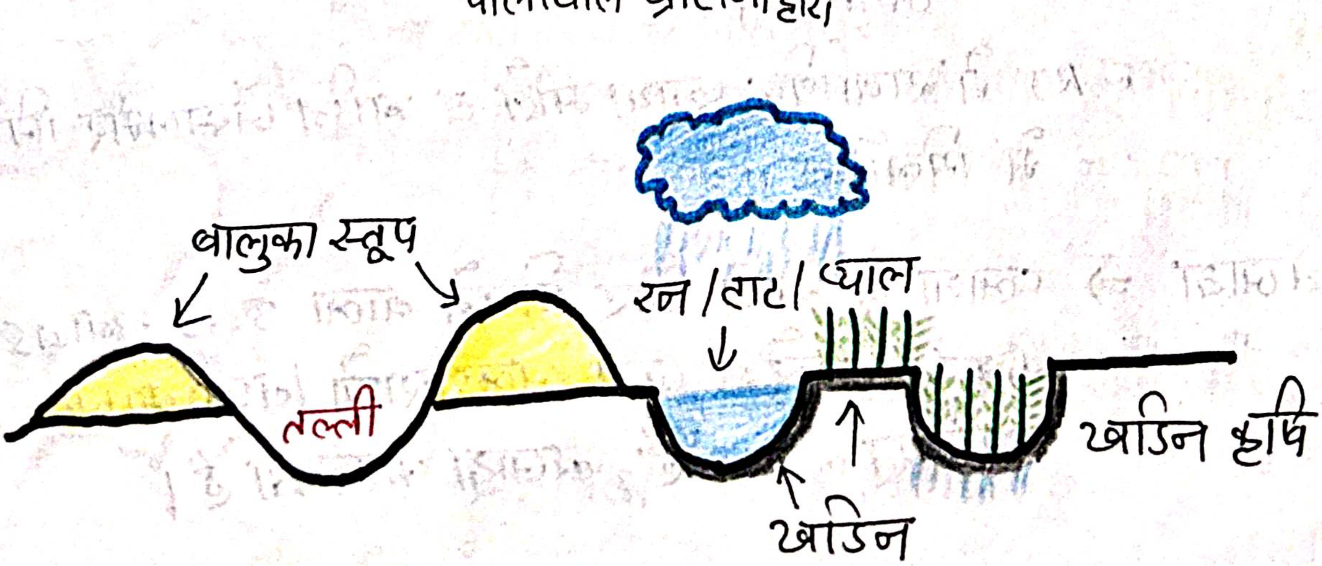

★ रन / रण ⇒ दो बालुका स्तुपो के मध्य मिलने वाली सामान्यतया अस्थायी झील जो दलदलीय प्रकृति की होती है रन / हट कहलाती है।

प्रमुख रण ⇒ जैसलमेर - पोकरण, कावोद, भाकरी, बिरमसर
बाड़मेर - थोब
फलौदी - बाप

Note :- RJ का सबसे बड़ा रण → (1) थोब (2) पोकरण
भारत का सबसे बड़ा रण → कच्छ का रण (GJ)

★ प्लाया ⇒ प्लाया से तात्पर्य मरुस्थलीय प्रदेश में मिलने वाले उच्च पर्वतीय प्रदेशों के मध्य मिलने वाला वह निम्नतम / निचला स्थान जहाँ चारो ओर से बह कर जल एकत्रित होता है, वह प्लाया कहलाता है।

- प्लाया झील की अधिकाशत : प्रधानता अर्द्ध शुष्क मरुस्थलीय प्रदेशों में मिलती है। तथा प्लाया का सबसे बड़ा उदा॰ RJ में सांभर झील के रूप में मिलता है।

★ बालसन झील ⇒ प्लाया का बेसिन भाग बालसन के नाम से जाना जाता है।

- RJ में सर्वाधिक प्लाया झीलें व बाडिन जैसलमेर जिले में मिलते हैं।

★ बजादा ⇒ प्लाया के चारो ओर मिलने वाला ऊबड़-खाबड़ कंकरिला प्रदेश जहां जलधाराओं / वर्षा का जल उपस्थित रहता है, बजादा कहलाता है।

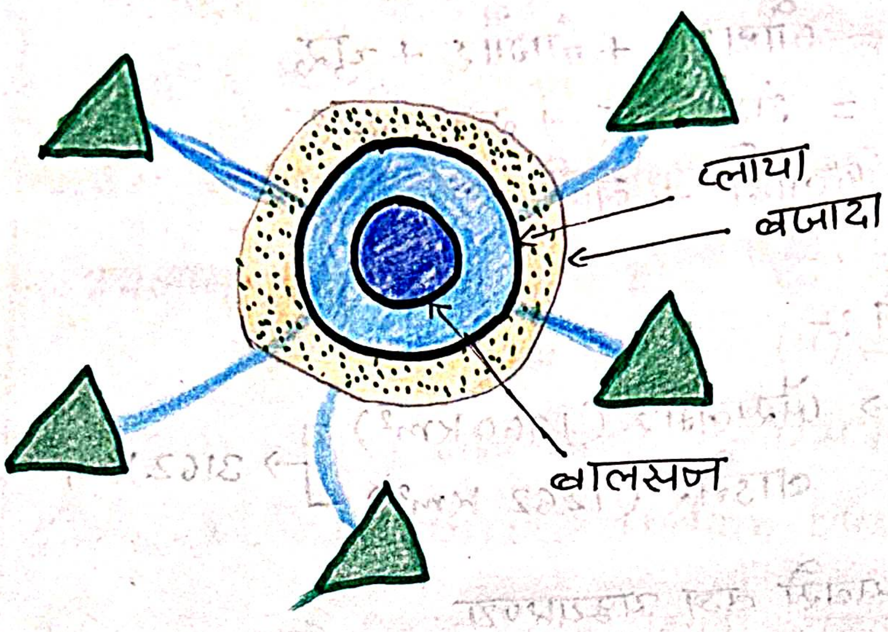

Note:-

- 25cm सम वर्षा रेखा के आधार पर प० मरु० प्रदेश को निम्न दो भागों में विभाजित किया जाता है -

  (1) शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश

  (2) अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश

[1] शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश / राठी / ARID ⇒

वर्षा की मात्रा = 0 - 25cm / अधिकतम 25cm

☆ सम गांव ⇒ जैसलमेर

→ RJ. का न्युनतम वर्षा वाला स्थान

→ वर्षा की अधिकतम मात्रा = 5cm

→ वनस्पति रहित / विहिन क्षेत्र

→ "सम के धोरे" विश्व प्रसिद्ध माने जाते हैं।

→ फिल्म जगत के लिए प्रसिद्ध

विस्तार => बीकानेर + जैसलमेर + बाड़मेर

प० भाग = जोधपुर + नागौर + चुरु

द० भाग = गंगानगर + हनुमानगढ़

नवीनतम = फलौदी + बालोतरा

राष्ट्रीय मरु उद्यान :-

- विस्तार -> जैसलमेर (1900 km^2), बाड़मेर (1262 km^2) -> 3162 km^2
- RJ का सबसे बड़ा अभ्यारण्य
- आकल वुड फोसिल पार्क, आकल (जैसलमेर)
  - जीवाश्म उद्यान
  - निर्माण - जुरासिक काल (18 ~~00~~ करोड़ वर्ष पुर्व)
    - -> वनस्पति के अवशेष

कुलधरा गाँव, जैसलमेर :-

- इसे "शापित / भुतों का गांव / भुतिया गांव" आदि नामों से जाना जाता है।
- -> यहाँ जुरासिक काल के डायनासोर व व्हेल मछली के अवशेष मिले हैं।

अंक्षाशीय विस्तार :- 25°N से 30°N तक

देशान्तरीय विस्तार :- 69°30'E से 70°45'E तक

★ राजकीय पक्षी ⇒ गोडावण :-

- दर्जा - 22 May 1981
- SN - अरडेओटिस नाइग्रीसेप्स / Ardeotis nigriceps
- उपनाम - (1) हुकना पक्षी (3) मुर्ग पक्षी
  (2) शर्मिला पक्षी (4) सोन चिड़िया
  (5) माल मोरड़ी (सोरसेन / बांरा)
  (6) Great indian bustard
- भोजन
  - शाकाहार - तारामीरा, सेवण घास, बाजरा, ज्वार
  - मांसाहार - टिड्डी, दीमक, छोटे किड़े
- शरणस्थली - राष्ट्रीय मरु उद्यान
- आश्रयस्थली - सेवण घासक्षेत्र (लाठी सीरिज क्षेत्र)
- प्रजनन केन्द्र - जोधपुर जन्तुआलय, मधानिया
- डाक टिकट - 2.30 Rs का (1980 में)
- आखेट निषेद क्षेत्र में सरक्षण स्थल -
  (1) सोखालिया (अजमेर)
  (2) सोरसेन (बांरा)
- 2010 में IUCN द्वारा इसको Red data book में संकट ग्रस्त प्रजाती में शामिल किया गया।

NOTE ⇒ प्रोजेक्ट गोडावण / Project GIB
- शुरुआत - 5 JUNE 2013
- अर्थ - गोडावण को बचाने हेतु चलाया गया अभियान

★ बालुका स्तुपों की प्रधानता के आधार पर शुष्क मरु० प्रदेश को निम्न 2 भागों में विभाजित किया जाता है →

(i) बालुका स्तुप मुक्त प्रदेश [41.5%]

(ii) बालुका स्तुप युक्त प्रदेश [58.5%]

(i) बालुका स्तुप मुक्त प्रदेश ⇒

- इस प्रदेश में बालुका स्तुपों की प्रधानता नहीं पाई जाती है।
- यहाँ अवसादी / तलछटी चट्टानों की प्रधानता मिलती है।

- अवसादी चट्टानों की प्रधानता के कारण जीवाश्म खनिज [कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि] की प्रधानता मिलती है।

विस्तार ⇒ जैसलमेर - सर्वाधिक - पोकरण, मोहनगढ़
जोधपुर - New - फलौदी
बाड़मेर - New - बालोतरा

प्रमुख मरुस्थल ⇒

(a) इर्ग → रेत / बालु की प्रधानता → रेतिला मरुस्थल

(b) हम्मादा → चट्टानों की प्रधानता → चट्टानी / पथरीला मरु०

(c) रेग → रेत + चट्टानों का मिश्रण → कंकरीला मरुस्थल

- इस हम्मादा क्षेत्र में सौर ऊर्जा की प्राप्ति की जाती है इसलिए इसे SEEZ के नाम से जाना जाता है।
↓
Solar
Energy
Enterprizes
Zone

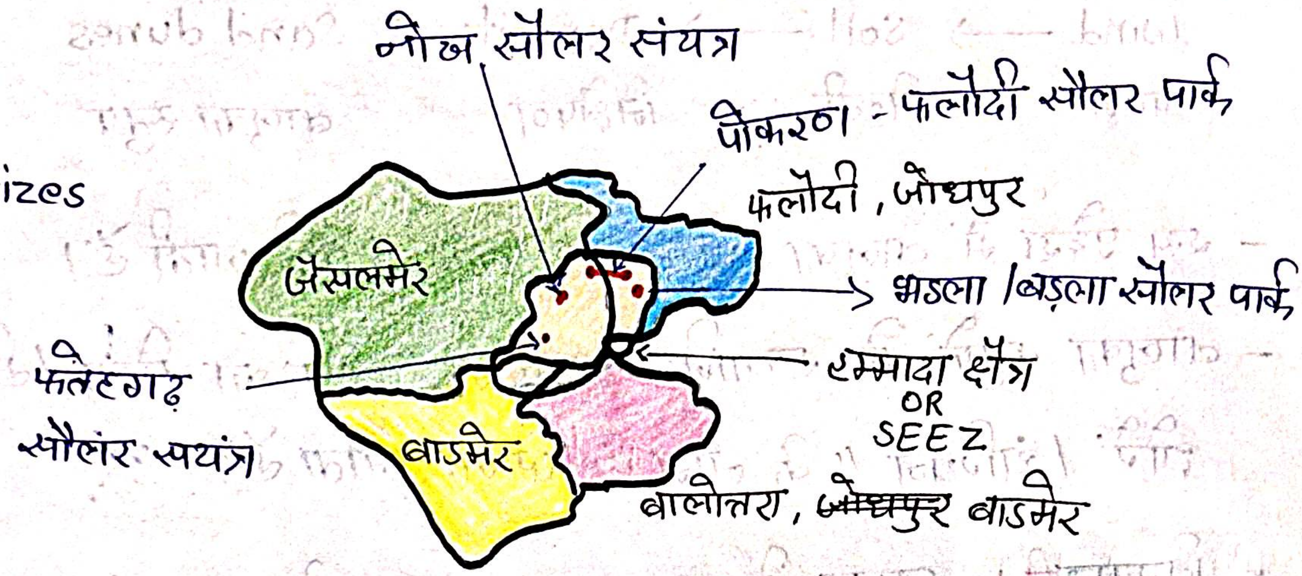

(ii) बालुका स्तुप युक्त प्रदेश ⇒

Wind ⟶ Soil ⟶ Deposit ∴ Sand dunes
पवन मिट्टी निक्षेपण बालुका स्तुप

- इस प्रदेश में बालुका स्तुपों की प्रधानता पाई जाती है।
- बालुका स्तुपों को स्थानिय भाषा में " रेत का टीला / टीबा / धोरें / धरियन " के नाम से जाना जाता है।
- विस्तार → इसका विस्तार लगभग सम्पुर्ण शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश में मिलता है।

☆ मैकी / Mckee द्वारा 1979 में बालुका स्तुपों की आकृति / संरचना व निर्माण के आधार पर निम्न भागों में विभाजित किया गया है -

☆ बालुका स्तुपों का वर्गीकरण (स॰ प॰ म॰ प्र॰) ⇒

(a) पवनानुवर्ती / रेखीय / अनुदैर्घ्य / Longitudinal ⇒
- पवनों के समानान्तर निर्मित है।

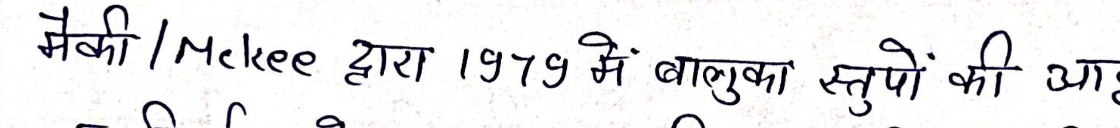

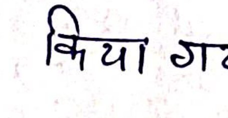

गासी / करवा / कॉरिडोर :- दो रेखीय बालुका स्तूपों के मध्य मिलने वाला नीचला स्थान जहां लोगों द्वारा परिवहन का कार्य किया जाता है। (परिवहन मार्ग।

→ ऊँचाई = 10-20m

→ लम्बाई = 100-200m

→ सर्वाधिक स्थायी बालुका स्तुप

→ विस्तार ⇒ द. गंगानगर
बीकानेर
जैसलमेर (max)
बाड़मेर

NOTE ⇒ • ये बालुका स्तुप सम, रामगढ़ (जैसलमेर), बालोतरा में प्रधानता में मिलते हैं।
• दृषवती नदी के मार्ग / बहाव क्षेत्र में पवनानुवर्ती बालुका स्तुपों की प्रधानता मिलती है।

(b) अनुप्रस्थ / अपवनानुवर्ती / Transverse बालुका स्तुप ⇒

→ ये सदैव पवनों के समकोण पर निर्मित होते हैं।

आकृति → पंजाकार, U आकार

विस्तार → रावतसर (हनुमानगढ़), सुरतगढ़ (गंगानगर)
देशनोक (बीकानेर)
ओसिया (जोधपुर)
बालोतरा (बाड़मेर)
पोकरण (जैसलमेर)

(c) बरखान/ बरछान / Cresent बालुका स्तुप ⇒

- आकृति - अर्द्धचन्द्राकार

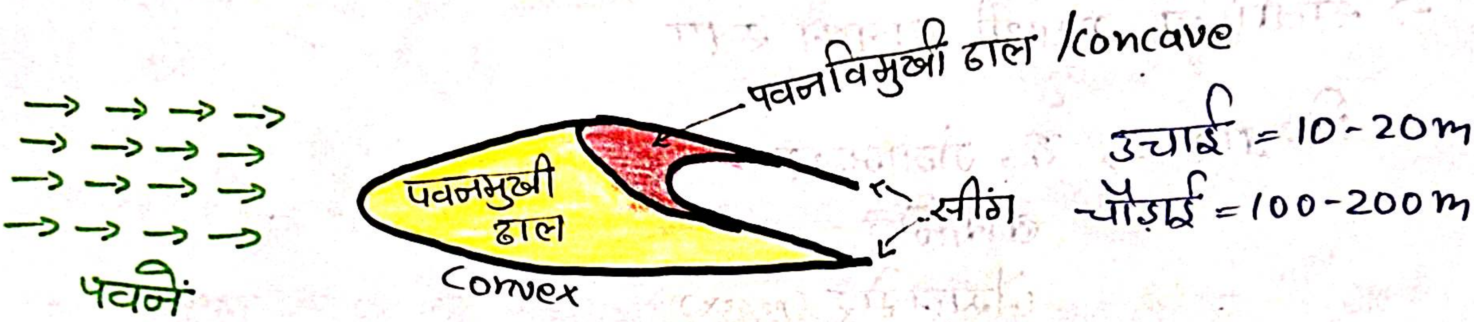

पवनमुखी ढाल = मंद
पवनविमुखी ढाल = सर्वाधिक तीव्र
] → दोनों ढालों के मध्य 34° कोण बनता है।

- ये बालुका स्तुप सर्वाधिक गतिशील है।
- सर्वाधिक विनाशकारी बालुका स्तुप ।
- इन बालुका स्तुपों सर्वाधिक ऊ. → 20m तथा ल. → 300m तक मिलता है।

⇒ विस्तार = भालेरी (चुरु) ओसिया (जोधपुर)
पोकरण (जैसलमेर) लुणकरणसर (बीकानेर)
सुरतगढ़ (गंगानगर) शेखावाटी क्षेत्र में।
↳ सीकर, झुन्झुनु, चुरु

- यह अनुप्रस्थ बालुका स्तुप का उदाहरण है।
- पवनों के अनुरुप निर्मित ।

NOTE ⇒ सीफ बालुका स्तुप कौनसे बालुका स्तुप का उदा० है?
Ans → (1) पवनानुवर्ती स्तुप
(2) बरखान बालुका स्तुप

(d) बरखानाइड्स बालुका स्तुप ⇒

आकृति – अण्डाकार
विस्तार – जैसलमेर

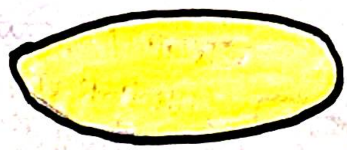

(e) पेराबोलिक / परवलाकार बालुका स्तुप ⇒

आकृति – महिलाओं के बालों की पिन के समान / हैयर पिन
(बरखान के विपरित)

विस्तार – सम्पुर्ण मरुस्थल

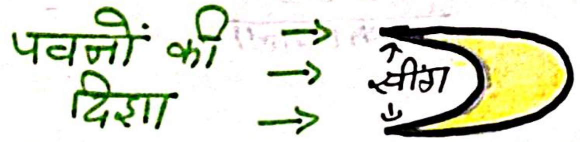

IMP • RJ में सर्वाधिक संख्या में मिलनें वाले बालुका स्तुप

(f) शक्र (शब्र) कॉफीज बालुका स्तुप ⇒

आकृति / निर्माण = झाडियों के पीछे (आसपास) निर्मित होने वाले बालुका स्तुप

विस्तार = सम्पुर्ण राजस्थान

- लघु आकृति
- सबसे छोटा बालुका स्तुप

(g) नेटवर्क बालुका स्तुप (जालीनुमा) ⇒

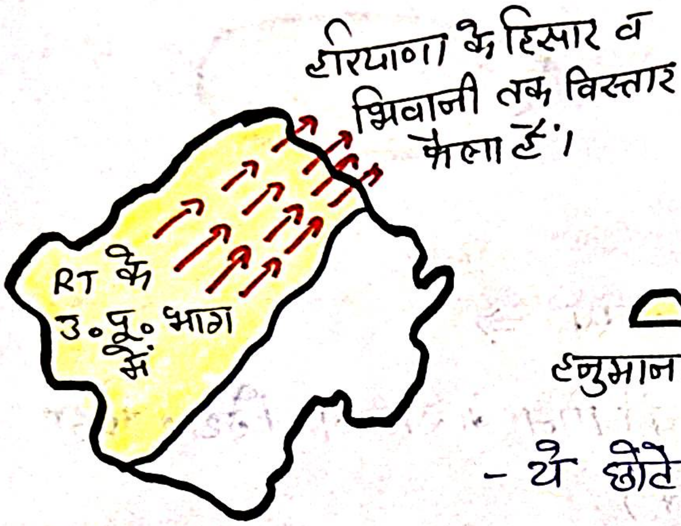

आकृति – कृषि जोत के समान

– ये बालुका स्तुप मरुस्थल के अग्रिम भाग में मिलते हैं।

– ये छोटे व गतिशील होते हैं।

विस्तार :- हनुमानगढ़
शेखावाटी प्रदेश – चुरु, झुंझुनु, सीकर, जीमकाधाना

(h) अवरोधी / अवरोधात्मक बालुका स्तुप ⇒

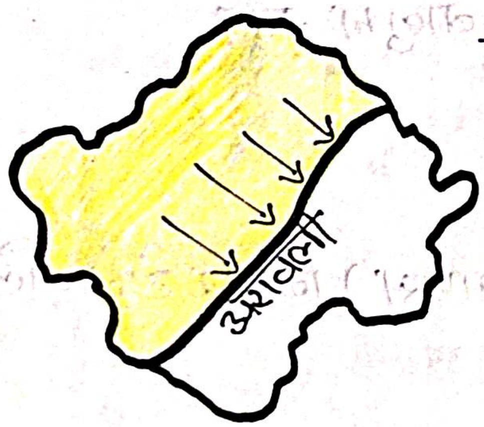

– पर्वतीय व मैदानी भागों के द्वारा अवरोध उत्पन्न करने से निर्मित होने वाले बालुका स्तुप।

– विस्तार – अजमेर – बुढा पुष्कर, पुष्कर
जयपुर – जोबनेर
सीकर – पलसाना

(i) तारा बालुका स्तुप ⇒

निर्माण – मरुस्थलीय प्रदेश के चट्टानी भागों के चारों ओर अनियमित पवनों द्वारा तारे के समान बनने वाले बालुका स्तुप।

विस्तार – जैसलमेर – मोहनगढ़, सोहनगढ़, पोकरण
गंगानगर – सुरतगढ़
बीकानेर

NOTE ⇒

Q. RJ के कौनसे जिले में सर्वाधिक बालुका स्तुप पाए जाते हैं?

- जैसलमेर

Q. RJ के कौनसे जिले में सर्वाधिक प्रकार के बालुका स्तुप पाए जाते हैं?

- जोधपुर [फलौदी + जोधपुर]

[2] अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश / बाँगड़ प्रदेश ⇒

- वर्षा की मात्रा - 25-50 cm

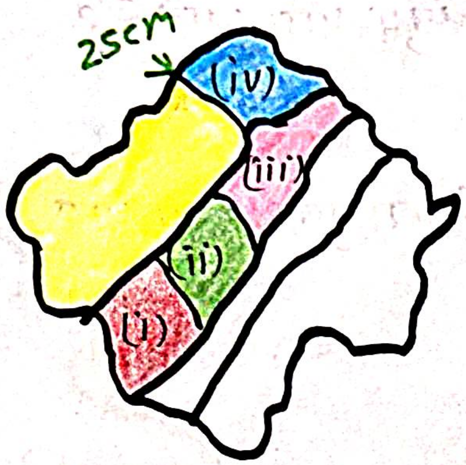

- अध्ययन की दृष्टि से वर्गीकरण - 4 type's

(i) लुनी बेसिन
(ii) नागौरी उच्च भूमि
(iii) शेखावाटी प्रदेश
(iv) घग्घर बेसिन

(i) लुणी / लुनी बेसिन / गोडवाड़ प्रदेश ⇒

उपनाम = लुनी - जवाई बेसिन

नामकरण = → लुनी व उसके सहायक नदियों के मध्य का भु-भाग - लुनी बेसिन
→ गौड़ राजपूतों की प्रधानता वाला प्रदेश - गोडवाड प्रदेश

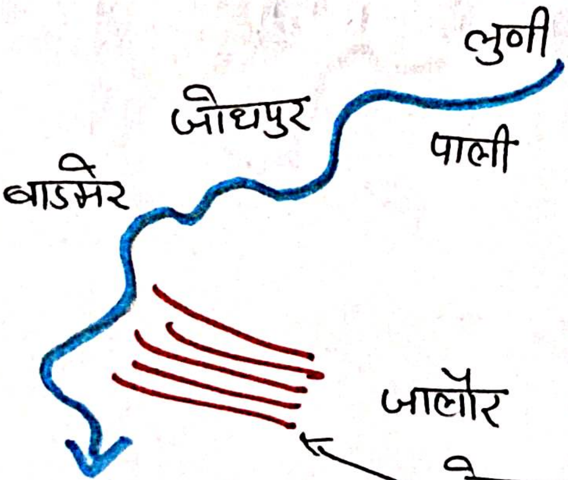

विस्तार = पाली
जोधपुर
बाड़मेर
जालोर
प. सिरोही etc. (आंशिक)

नेहड़ा / नेड़ा / नेठा ⇒
→ परम्परागत जल संरक्षण विधि
→ वर्षा जल / लुनी के जल को छोटी-2 नालियों में संग्रहित किया जाता है।

- इस प्रदेश में 56 की पहाड़ी क्षेत्र स्थित है -

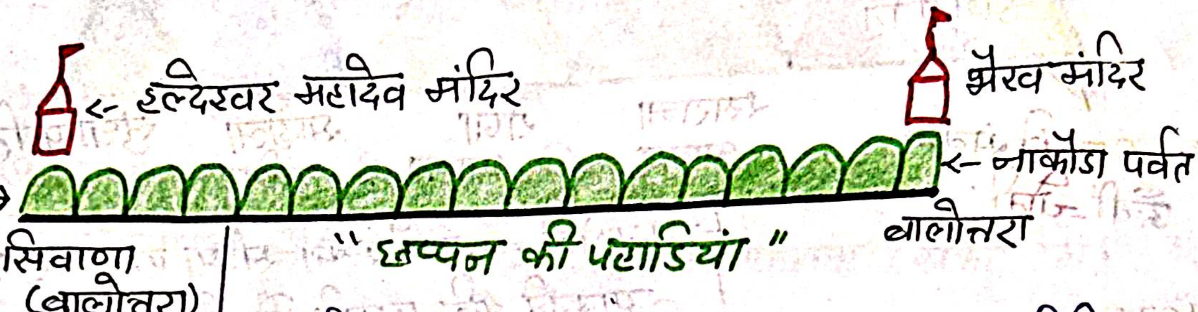

पिपलुद पर्वत → प० RJ का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान → लघु MT Abu

- अर्थ - संख्या 56 में मिलने वाली पहाड़ियों का समूह
- विस्तार - सिवाना से बालोतरा तक [बालोतरा / बाड़मेर]
- आकृति - गुम्बदाकार
- → चट्टानों की श्रेणी – ग्रेनाइट युक्त चट्टानें।

NOTE ⇒

Q. RJ में कौनसे जिले को ग्रेनाइट सिटी कहाँ जाता है?
- जालौर

→ नाकोड़ा पर्वत जैन समुदाय/समुदाय को ~~सम्बन्धित~~ समर्पित है यहाँ 23 वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मंदिर स्थित है।

→ 56 के मैदान का सम्बन्ध बांसवाड़ा प्रतापगढ़ क्षेत्र से मिलता है।

★ इस प्रदेश में कुछ पर्वतीय स्थिति सम्मिलित रूप से मिलती है जिसे जसवन्तपुरा की पहाड़ी के नाम से जाना जाता है तथा इसका संबंध जालौर जिले से मिलता है।

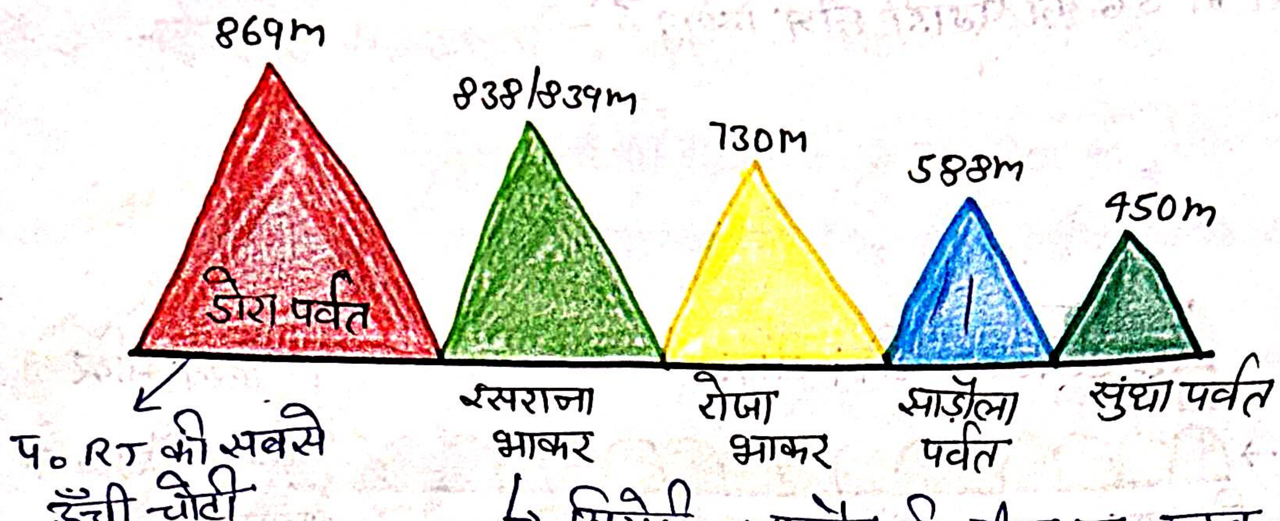

NOTE ⇒

→ सिरोही - जालोर की सीमा पर कटकनुमा आकृति की पहाड़ि जिसके किनारे तीव्र ढाल के है।

→ भाकर ~~स्थूलौर~~ सिरोही में सर्वाधिक

सुंधा माता पर्वत ⇒

- नामकरण - इस पर्वत पर सुंधा माता का मंदिर स्थित है इसलिए इसे सुंधा माता पर्वत के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ 2006 में RJ के प्रथम रोप वे की स्थापना की गई जिसकी कुल लम्बाई 800m है।
- यहाँ RJ का प्रथम काले भालु का अभ्यारण्य स्थापित किया जा रहा है।
- "सुंधा माता संरक्षित क्षैत्र" यहाँ स्थित है जिसका विस्तार जालोर व सिरोही में फैला हुआ है।

लुणी बेसीन ⇒ — मलाणी क्षैत्र, बाडमेर - ग्रेनाइट की पहाड़ियाँ

- प्राकृतिक कुंए - "बेरा"
- बागवानी फसलों के लिए जाना जाता है।
- धुसर भूमी / नवीन जलोढ मृदा क्षैत्र
- लवणीय पादप क्षैत्र (बाडमेर)
- कालाभूरा डुंगर (पाली) → पुर्वी लुणी बेसिन

(ii) नागौर उच्च भूमि ⇒

- स॰ त॰ से ऊंचाई = 300 - 500m
- विस्तार = नागौर, डीडवाना - कुचामन, प॰ अजमेर, ब्यावर
- प्रमुख श्रेणियां =
  - (a) गोठ - मांगलोद श्रेणी - जिप्सम की प्रधानता
  - (b) मकराना श्रेणी - संगमरमर की प्रधानता (सफेद रंग)
  - (c) जायल श्रेणी - फ्लोराइड की प्रधानता

फ्लोराइड की प्रधानता → "सर्वाधिक कुबड रोगी" → "राज॰ की कुबड / बांका पट्टी" "Hauneh belt"
↓ विस्तार - जायल से अजमेर तक

↓ कारण
↓
फ्लोरोसिस रोग → हड्डी → कमजोर
→ दाँत → पीले

☆ राजस्थान ग्रामीण फ्लोराइड मुक्त पेयजल परियोजना ⇒

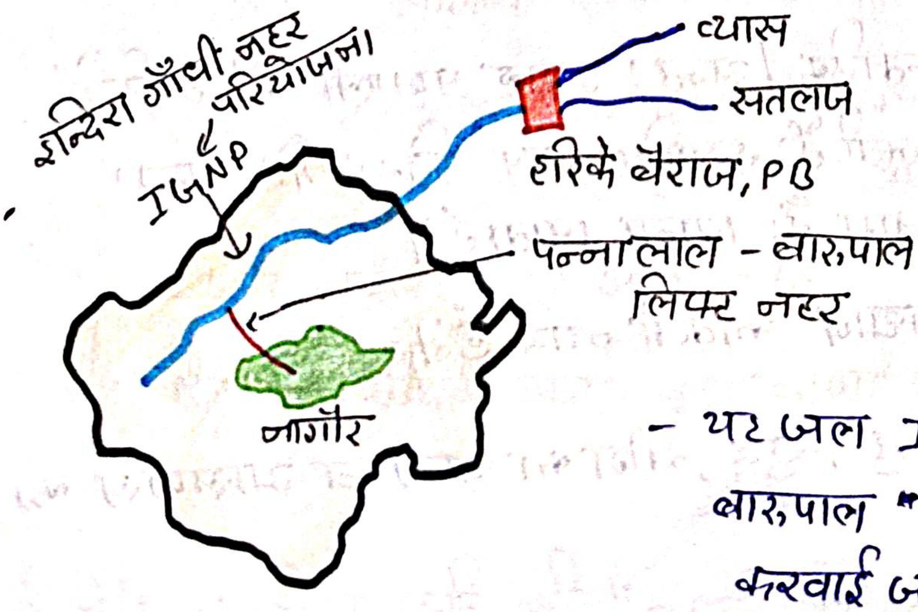

अर्थ → नागौर व आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में फ्लोराइड मुक्त पेयजल (शुद्ध जल) उपलब्ध करवाया जा रहा है।

- यह जल IGNP से "पन्नालाल - बारुपाल "लिफ्ट नहर" द्वारा जलापूर्ति करवाई जाती है।

NOTE ⇒

→ नागौर क्षेत्र में सर्वाधिक खारे पानी की झीले स्थित है।

→ नागौर क्षेत्र कृषि उपकरण निर्माण हेतु प्रसिद्ध है।

→ यह क्षेत्र नमक उत्पादन हेतु भी प्रसिद्ध है।

→ RJ की प्रसिद्ध नमक मण्डी → नावा मण्डी, डीडवाना-कुचामन / नागौर

→ सांभर झील
- ↳ इसके भ्रंस के कारण उच्च भूमि कहलाता है।
- ↳ यह RJ का निम्नतम स्थल है।

→ थली → नागौर से बीकानेर तक उच्च भूमि क्षेत्र।

(iii) शेखावाटी / अन्तः प्रवाह क्षेत्र ⇒

नामकरण ⇒

- राव शेखा के द्वारा इस प्रदेश को बसाया गया इसलिए इसे शेखावाटी प्रदेश कहते हैं।
- इस प्रदेश में आन्तरिक / अन्तः प्रवाह प्रणाली की नदियों की प्रधानता मिलती है इसलिए इस प्रदेश को अन्तः प्रवाह क्षेत्र के नाम से जाना जाता है।
- इस प्रदेश की प्रधान कांतली नदि है।

विस्तार ⇒ सीकर, झुंझुनु, चुरु, नीम का थाना व आसपास का क्षेत्र।

NOTE ⇒

तोरावाटी प्रदेश ⇒ कांतली व इसकी सहायक नदियों का बहाव क्षेत्र

↳ विस्तार = जयपुर + सीकर + झुंझुनु

⇒ राजकीय वृक्ष = खेजड़ी वृक्ष

- दर्जा = 31 Oct 1983
- SN = प्रोसेपिस सिनेरेरिया
- अन्य नाम = (1) कल्प वृक्ष
  - (2) राज० का गौरव
  - (3) शमी – बिश्नोई सम्प्रदाय
  - (4) जांटी – PB-HR सीमा पर
  - (5) छोकड़ा – सिन्धी भाषा
  - (6) सीमलो – स्थानिय भाषा
  - (7) बन्ना – बन्नी – कन्नड भाषा
  - (8) पेयमयी

  Note- RJ का गौरव → इतिहास → चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- पत्तिया – लुम
  - फुल – मींझर
  - फली – सांगरी —सुखने पर→ "खोका / खोखा"
- पुजा – दशहरा [जन्माष्टमी, गोगा नवमी, तेजाजी दशमी]
  - ↳ आश्विन शु० प० – दशमी
- खेजड़ी दिवस – 12 Sep 1978
- ↳ RJ में सर्वाधिक खेजड़ी वृक्षों वाला
  - → प्रदेश – शेखावाटी
  - ↳ जिला – नागौर (डीडवाना – कुचामन)

→ बीड़ → शेखावाटी की "चारागाह भूमि"

→ प्रमुख कुटीर उद्योग ⇒

(1) गोटा किनारी उद्योग → प्रसिद्ध खण्डेला (सीकर), सर्वाधिक कार्य - जयपुर

(2) बातिक उद्योग → खण्डेला (सीकर)

(3) पेचवर्क / चटपटी उद्योग → शेखावाटी (झुंझुनु)

→ प्रमुख जलाशय ⇒

कच्चे कुंए - जोहड

पक्के कुंए - नाड़ा

सामान्य जलाशय → सर / सरोवर / ताल

झील - लवणीय झील

↳ रेवासा व छापर

★ डॉ॰ राजेन्द्र सिंह ⇒

- इनके द्वारा शेखावाटी प्रदेश में जोहड़ो को विकसित व पुनर्जीवित करने का कार्य किया गया जिसे "जोहड विकास कार्यक्रम" के नाम से जाना जाता है।

- इनको "जोहड वाले बाबा / Waterman of Raj" के नाम से जाना जाता है।

- इनके द्वारा यह कार्य सर्वाधिक सीकर / शेखावाटी क्षेत्र में विकसित करने का कार्य किया गया।

(iv) घग्घर बेसिन ⇒

नामकरण - घग्घर नदी का बहाव क्षेत्र
उपनाम - नहरी प्रदेश
विस्तार - हनुमानगढ़, गंगानगर

NOTE ⇒

- इस प्रदेश में नहरो की प्रधानता मिलती है इसलिए इसे नहरी प्रदेश कहा जाता है।
- यहाँ IGNP व गंगनहर की प्रधानता है।

सेम समस्या ⇒ अर्थ ⇒ लवणीय मृदा/भुमि में जल की अधिकता होने पर लवण केशिकी क्रिया द्वारा लवण उपर की ओर आने लगा, आगे चलकर यह एक सफेद नमकीन परत/रेह/कल्लर के रुप में जम गया जबकि धरातल का आन्तरिक भाग जल की प्रधानता के कारण दलदलीय प्रकृति का बन गया इसे सेम समस्या के नाम से जाना जाता है।

सर्वाधिक प्रभावित
→ प्रदेश - घग्घर प्रदेश
→ जिला - हनुमानगढ़ > गंगानगर
→ स्थान - बढोपल (हनु.)

NOTE ⇒ सेम समस्या के उपचार के लिए "इण्डो - डच योजना" संचालित की गई है तथा इस प्रदेश में युकेलिप्टस वृक्ष व जिप्सम का प्रयोग कर समाधान किया जा रहा है।

NOTE ⇒

- RJ का अन्न भण्डार /कटोरा → गंगानगर
- RJ में सर्वाधिक कपास व किन्नु का उत्पादक जिला → गंगानगर
- RJ की किन्नु मण्डी = गंगानगर
- खेल के उपकरणों के लिए प्रसिद्ध जिला = हनुमानगढ़
- सर्वाधिक नहरी प्रवेश वाला जिला – हनुमानगढ़
- RJ का सर्वाधिक सिंचित जिला – गंगानगर

★ प. मरुस्थलीय प्रदेश के सन्दर्भ में ⇒

⇒ नखलिस्तान /मरुद्यान /ओचसिस ⇒

– मरुस्थलीय प्रदेश में मिलने वाला वह क्षेत्र जहां जल व वनस्पति की प्रधानता पायी जाती है।

⇒ बाप बोल्डर क्ले ⇒

– पर्मो कॉर्बोनिफेरस काल में हिमानी (बर्फ) के द्वारा बारीक मृदा (क्ले) का निर्माण कर जमाव किया गया।

– स्थित – फलौदी /जोधपुर